

जैक और बीनस्टॉक

किसी समय की बात है, एक गाँव में एक गरीब विधवा अपने आलसी और लापरवाह पुत्र जैक के साथ रहती थी। जैक घर के कामों में, जंगल से लकड़ी काटने में तथा गाय का दूध निकालने में माँ की सहायता किया करता था। पर फिर भी उन्हें दो जून का भोजन नसीब नहीं होता था। धीरे-धीरे घर की सारी चीजें बिकती गईं और अंत में मात्र एक गाय बची।

एक दिन माँ ने जैक को बुलाकर कहा, “पुत्र! हमारे पास कुछ नहीं बचा है। खेत में बीज डालने के भी पैसे नहीं हैं। तुम बाजार जाकर इस गाय को अच्छे पैसे में बेच आओ।”

“ठीक है माँ”, ऐसा कहकर जैक गाय को लेकर चल दिया। शहर जाते समय उसे एक अजीब से दिखने वाले आदमी ने रोककर पूछा, “हे बालक! तुम कहाँ जा रहे हो?”

जैक ने उत्तर दिया, “मैं गाय को बेचने शहर जा रहा हूँ।”

“हूँ ss गाय तो स्वस्थ है... मैं इसे खरीदना चाहता हूँ...” यह कहकर उसने जैक को बींस के कुछ जादुई बीज दिए। उसने फिर कहा, “बालक, ये कोई साधारण बींस नहीं हैं। ये जादुई बीज हैं। इन्हें बगीचे में लगाओगे तो

रातभर में ही आकाश को छूने लगेंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मैं तुम्हारी गाय वापस दे दूंगा।”

जैक खुशी खुशी बीज लेकर घर लौटा और माँ को उसकी विशेषता बताई। माँ ने क्रोधित होकर बींस के बीज को खिड़की के बाहर फेंक दिया।

अगली सुबह जब जैक सोकर उठा तो खिड़की के बाहर बींस के बेल को देखकर हैरान रह गया। जिज्ञासावश वह बेल पर चढ़ने लगा और चढ़ते-चढ़ते एक मरुभूमि में पहुँच गया। तभी एक परी ने प्रकट होकर कहा, “तुम्हारे पिता एक धनाढ्य और उदार व्यक्ति थे। उनकी मित्रता एक दैत्य से हो गई थी। उसने तुम्हारे पिता की हत्या कर उनका सारा धन हड़प लिया था। वह यहीं एक बड़े घर में रहता है। तुम जाकर उसकी सारी सम्पत्ति ले लो।”

चलते-चलते शाम हो गई। जैक को एक विशाल हवेली के बाहर एक औरत खड़ी दिखाई दी।



थके हुए जैक ने उससे भोजन और आश्रय मांगा। उसने जैक को सावधान करते हुए कहा, “तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए था। मेरा पति एक दैत्य है। उसे मानव मांस बेहद पसंद है। उसके आने से पहले ही तुम चले जाओ।”

तभी अचानक दैत्य आता दिखाई दिया। उस स्त्री ने शीघ्रता से जैक को तंदूर के भीतर छिपा दिया। दैत्य घर में आते ही चिल्लाया, “मुझे बहुत भूख लगी है। मैं एक साथ तीन गाँ ख़ा सकता हूँ। कहाँ है मेरा भोजन?” भोजन समाप्त करके दैत्य फिर चिल्लाया, “आलसी औरत, मेरी मुर्गी तुरंत लाओ।”

पत्नी ने उसे उसकी मुर्गी लाकर दे दी।

दैत्य ने गरजकर कहा, “अंडा दो...” और मुर्गी ने सोने का अंडा दिया। “दूसरा अंडा दो...” और मुर्गी ने पहले से भी बड़ा अंडा दिया। काफी देर तक दैत्य मुर्गी के साथ मन बहलाता रहा और फिर सो गया।

जैक ने अवसर देखकर मुर्गी उठाई और भाग गया। घर आकर उसने अपनी माँ को मुर्गी दिखाई और कहा, “अंडा दो...” मुर्गी ने सोने का अंडा दिया। शीघ्र ही वे धनवान बन गए।

कुछ माह बाद जैक ने वेश बदला और फिर बींस की लता पर चढ़कर हवेली में पहुँच गया। उसने उस स्त्री को एक मनगढ़ंत कहानी सुनाई और भोजन तथा रहने की जगह मांगी। स्त्री ने दया कर उसे भोजन दिया और फिर एक कबाड़ की कोठरी में छिपा दिया।

थोड़ी देर बाद दैत्य आते ही चिल्लाया, “मुझे ताजे मांस की खुशबू आ रही है।” पत्नी ने उत्तर दिया, “दिन में स्वप्न देखते हो? इस मरुभूमि में कोई आदमी कहाँ से आएगा। मैंने तुम्हारा पसंदीदा भोजन परोसा है... खा लो।” भोजन समाप्त कर सोने के सिक्कों से भरे थैले से अपना मन बहलाते-बहलाते वह सो गया। जैक ने धीरे से थैला चुराया और वापस घर लौट आया। उसने थैला अपनी माँ को दिया। एक नया घर खरीदकर दोनों प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे।

कुछ वर्षों बाद जैक पुनः उस हवेली में पहुँचा। उस स्त्री को अपनी बातों में उलझाकर जैक फिर से हवेली चला गया। शाम को वापस आने पर दैत्य ने अपना जादुई बीन मांगा। दैत्य ने उससे गाना सुनाने के लिए कहा। गाना सुनते-सुनते उसकी आँख लग गई। अवसर देखकर जैक जादुई बीन उठाकर भागा। बीन ने पुकारना शुरू किया, “बचाओ... बचाओ” दैत्य जाग गया और जैक के पीछे भागा। जैक शीघ्रता से लता से नीचे उतरा और कुल्हाड़ी से लता को ही काट डाला। दैत्य गिरकर मर गया।

तभी पुनः परी प्रकट हुई। उसने जैक का धन्यवाद किया और उसे आशीर्वाद दिया। जैक अपनी माँ के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहने लगा।